रात्रि क्लास ओम् शांति बाबा याद है? 1/5/68

बच्चों ने अनुभव .....दो से कलम लगती जाती है। विचार है जो भी यहाँ आए, सभी के फोटो हो। ऐसी जगह हो जहाँ सभी ..... हो। हर सेन्टर का अलग। इसमें फायदा क्या होता है। बाप जब बैठते हैं, बच्चों को याद करते हैं ना। जो सपूत बच्चे सर्विसएबुल हैं उनको जास्ती याद करते हैं। यूँ तो सभी बच्चे हैं, उनमें जो जास्ती सर्विस करते हैं। जैसे मम्मा की आत्मा गई। मम्मा कहने से शरीर पहले याद आता है। फिर समझा जाता है आत्मा चली गई। तुम अनुभव सुनाते हो, बाप भी सुनाते हैं। बाप जब आते हैं तो मम्मा की आत्मा को याद करेंगे। बहुत अच्छी सर्विस करती थी। बहुतों का कल्याण किया। ड्रामा अनुसार उनको शरीर छोड़ना था। जहाँ भी होगी वहाँ अच्छा ही पार्ट बजाती होगी। जो अच्छे–2 सर्विस करते हैं। देहली, देहरादून, बनारस, बम्बई याद आवेंगे। यहाँ भी बाबा देखते रहते हैं चारों तरफ। इसलिए बत्ती भी लाल नहीं। दिखाई नहीं पड़ता है। बच्चों को देखते हैं। सर्विसएबुल है तो प्यार करते हैं। आत्माओं को प्यार किया जाता है। आत्मा ही अच्छी सर्विस करती है। अच्छे सर्विस करने वाले को दो मिनट जास्ती देखेंगे। बाबा अनुभव सुनाते हैं। लव तो आत्मा है। शरीर का तो नहीं। बाप आत्मा को ही प्यार करते हैं। सर्विसएबुल बच्चों को देखेंगे। उनको कशिश होगी। समझेंगे बाबा को जाकर पकड़े; परन्तु हुकुम नहीं है। (जोर से) नहीं खैंचता हूँ। कोई में दैवीगुण नहीं हैं तो देखेंगे भी नहीं। आत्मा में अवगुण देखा तो ध्यान नहीं देंगे। यह बच्चा अच्छा नहीं है। इनमें यह भूत है। फला..... आदत खराब है। आदतों को भी देखता हूँ। खान–पान, चलन। आपे ही सर्विस करते हैं, कहने से करते हैं। बाप तो सभी देखते हैं। बाप का फर्ज़ है बच्चों को देखना, प्यार करना। प्यार भी कट को उतारते हैं। कशिश होती है ना। मज़ा आता है। एक–2 फूल को देखते हैं। बगीचे में जाते हैं तो एक–2 फूल को देख खुश होंगे। महिमा की जाती है। यह भी बाबा का बगीचा है। जो सर्विस करते हैं। ब्राह्मणियों से भी पूछता हूँ यह सर्विस कर सकते हैं। दिल होगी देखने। निहाल तो होगा ना। नज़र से निहाल स्वामी। अभी तुम बच्चे समझते हो निहाल करने वाला एक ही बाप है। गति–सद्गति को ही निहाल कहा जाता है। हरेक बात समझाई जाती है। नहीं तो तुम क्या जानो बीज और झाड़ से। कितने ढेर के ढेर शास्त्र आदि हैं। समझते हैं भक्तिमार्ग पास्ट हो गया। अभी बच्चों को बाप से वर्सा लेना है। बच्चों को बाप कहते हैं दैवीगुण धारण करो। यहाँ झूठ बोलेंगे तो वह बहुत बड़ी दरबार है। वहाँ से कोई छूट न सके। यहाँ तो सच भी पकड़ जाते हैं। कोई–2 पाप किए भी (छूट) जाते हैं। झूठी जजमेन्ट दे देते हैं। नम्बरवार तो हैं ना। कोई ऐसा काम करता है तो कहेंगे तुम तो हज्जाम हो। अक्ल नहीं है। फाँसी भी देते हैं। फिर कोई होशियार, तीखा बैरिस्टर निकलता है छूड़ा देते हैं। तो उन (जजों) को हज्जाम कहेंगे ना। अपील पर छोड़ दिया तो उनको जट कहेंगे ना। अपील न करे तो नुकसान हो (जा)ये ना। बैरिस्टर देखता है बिचारा गरीब है, इनोसेन्ट है। बोला, मैं इनकी वकालत देता हूँ। छूड़ दिया। उनको अपना बच्चा बनाकर सिखलाए बैरिस्टर बना दिया। दुनिया में झूठ तो बहुत ना, जो सच्चे फँस पड़ते, झूठे छूट जाते हैं। अंधेर नगरी है ना। सभी को श्री–2 कह देते हैं। हिन्दू–मुसलमान सभी श्री। तो अंधेर नगरी हुई ना। फिर कण–2 पत्थर–2 को भी श्री कहेंगे। माया बुद्धि को ताला लगा देती है, जो न समझ सके। बेहद का बाप, बाप भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है। कम से कम पढ़ाने वाले को तो याद करो। फिर भी कहते हैं– बाबा, भूल जाते हैं। अच्छा, टीचर को याद करो, सद्गुरु को याद करो। गायन भी है तुम्हीं हो माता... ज्ञान का सागर अर्थात् टीचर ठहरे ना। वह जैसे है भक्ति के सागर। मैं हूँ ज्ञान का सागर। भक्ति है तो ज्ञान नहीं। मनुष्य में ज्ञान होता ही नहीं। मनुष्यों की है भक्ति। यह भी समझाया है अभी हम ब्राह्मण हैं, फिर देवता बनेंगे। बाबा को याद करते रहेंगे तो तुम्हारी आत्मा सतोप्रधान बन जावेगी। ब्राह्मण अभी सीढ़ी चढ़ना शुरू करते हैं। चढ़ती कला ब्राह्मणों की होती है, जो पुरुषार्थ करते हैं। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। बाप को याद करो तो सतोप्रधान बन जावेंगे। ख्याल करो हम क्या पद पावेंगे। उस पर है पुरुषार्थ। दैवी गुण भी

(धारण) करना है। आप समान बनाना है। अन्दर–बाहर सच्चा रहना है। झूठ तो बोलना ही नहीं चाहिए, नहीं तो पद भ्रष्ट हो जावेंगे। तब बाबा कहते हैं अपनी जाँच करो, विकर्म तो नहीं किया। नहीं तो अपने तकदीर .... घाटा। बाप कहते हैं रजिस्टर रखो, तुम्हारा बहुत कल्याण होगा। स्कूल में भी रजिस्टर रखते हैं ना। रोज़ाने हाजरी भी पड़ती है। मुरली तो मिल सकती है। समझना चाहिए मुरली पर खर्चा भी होता है। जो तुम बच्चे देते हो (शिव)बाबा खर्चा करते हैं। यह है ट्रस्टी। तुम बच्चों से ही खर्चा में लगाते हैं। शिवबाबा क्या करेंगे। पैसे तो देहधारियों को चाहिए। भक्तिमार्ग में ईश्वर अर्थ करते हैं तो अच्छा फल निकले। इनडायरैक्ट करते हैं; परन्तु पाप ..... से थोड़े ही कटते हैं। फिर भी पतित–पावन को याद करते हैं। धन देने से पावन थोड़े ही बनेंगे। तुम पावन (ब)नेंगे योगबल से। अभी है एक जन्म का 21 जन्म लिए। ईश्वरीय शिवबाबा के बैंक में तुम्हारा जन्म–जन्मांतर लिए जमा होता है। शिवबाबा भण्डारा है ना।

बाप आते हैं कब अपकार नहीं करते हैं। सभी कहते हैं मुक्ति–जीवनमुक्ति चाहिए। तो उपकार करते हैं ना। बच्चों को भी समझाते रहते हैं सभी पर उपकार करो। बोलो, बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जावेंगे। भारत का शास्त्र गीता है। कम से कम इनको तो मान देना चाहिए ना। अभी तुम समझते हो भक्तिमार्ग माना दुर्गतिमार्ग है। तुमको कहते हैं इससे भगवान मिलता है। है कुछ भी नहीं। तुम बच्चे जानते हो शिवबाबा को याद करने से स्वर्ग का वर्सा मिलेगा। यह भी लिखना चाहिए। यह अच्छी बनाई है। देखने से ही झट याद आती है शिवबाबा की। शिवबाबा याद है? जिससे स्वर्ग की बादशाही मिलेगी। नीचे यह भी लिखना चाहिए। बहुत बनाकर ढेर बाबा के पास भेज देनी चाहिए। बाबा फिर दे देंगे। यह उठा कर ले जाओ। आपे ही हम मंगा लेंगे। धनी बैठा है ना। बच्चों पर लव है ना। जाकर सर्विस करेंगे। तो बच्चों की दिल रखनी होती है। मेहनत करते हैं। घर में दूसरा कोई नहीं है। यह लिखत भी देखने से झट सावधान हो जावेंगे। शिवबाबा याद है? एक/दो को सावधान किया जाता है ना। और कोई नहीं है तो यह भी सावधान करेंगे। किसको तुम समझावेंगे किस काम के लिए हम यह बनाते हैं, बहुतों का कल्याण होगा। झट देखेंगे ले जाओ। बाबा जानते हैं बच्चों को माया भुला देती है। इसलिए कदम–2 पर यह रहना अच्छा है। बैज भी लगा रहे।

इस समय दो/चार म्युज़ियम इकट्ठे खुल रहे हैं। पहली तारीख से मुहुर्त करते हैं म्युज़ियम का। तो कोई भी कुमारी वा माता सर्विस लिए जा सकती है तो नाम लिख दे– फलाने तारीख से फलाने समय तक हम जा सकती हैं। मेल भी (नाम) दे सकते हैं। फिर जो पास करेंगे उनको बुला लेंगे। बच्चों को अपना नाम भेज देना चाहिए। अपलाई करना चाहिए। अभी खास बाबा कहते हैं। मद्रास, आगरा, पटना में म्युज़ियम खुल रही है, शायद अहमदाबाद में भी खुल जाए। बम्बई में भी गुडू का सेन्टर म्युज़ियम होगा। भभका होगा तो बहुत आकर देखेंगे। कोई को तीर लग जावेगा। तुम बच्चे हो, बेहद के बाप का परिचय देते हो। धनी का बना सकते हो। और तो कोई दुनिया में है ही नहीं। सफेद ड्रेस भी हरेक के पास हो। कहाँ भी बुलावा हो तो सफेद ड्रेस साथ ले जाओ। सफेद ड्रेस स्वच्छ होते हैं। अच्छा। बच्चों को गुडनाइट।

बाप सम्मुख कहते हैं यह सभी कुछ दे दो। फिर डायरैक्ट देंगे। ट्रस्टी होकर सम्भालो। कोई में मोह न रखना। कोई तो बन्दरियाँ हैं ऐसी हैं मोह टूटता ही नहीं। लोभ भी बड़ा तंग करता है। समझते नहीं लोभ किसको कहा जाता है। पहला नम्बर है देह अभिमान। वही बड़ी मुसीबत है। फिर है काम, क्रोध। बाप कहते हैं देही–अभिमानी बनो। नाम–रूप याद न रहे। हम सभी भाई हैं। भाई समझ ज्ञान दो। यह मेहनत की बात है। इसमें माया का आपोजीशन भी बहुत होता है। देही–अभिमानी बनना बहुत मेहनत है। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। यह ही भूल जाते हैं। अच्छा, ओम